

श्रीः
श्रीमते रामानुजाय नमः
श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः
श्रीगुरुपरनपुराधीशाय श्रीकृष्णाय परब्रह्मणे नमः

श्री मेल्लडुर् नारायणभट्टतिरेः कृतिषु
॥ श्रीमन्नारायणीये षडशीतितमं दशकम् ॥

This document has been prepared by

Sunder Kidāmbi

with the blessings of

श्री रङ्गरामानुज महादेशिकन्

His Holiness śrīmad āṇḍavan śrīraṅgam

শ্রীঃ

শ্রীমতে রামানুজায় নমঃ

শ্রীমতে নিগমান্তমহাদেশিকায নমঃ

॥ শ্রীমন্নারাযণীযে ষডশীতিতমং দশকম্ ॥

সাল্লাদিরধরণনং ভারতযুদ্ধরণনং চ

সাল্লে ভৈষ্ণীরিরাহে যদুবলরিজিতশ্চন্দ্রচূডাদ্বিমানং

রিন্দন্ সৌভং স মাযী ৱরিযি রসতি কুরুংস্তুপুরীমভ্যভাঙ্ক্ষীৎ।
প্রদ্যুম্নস্তং নিরুঙ্কান্নিখিলযদুভটৈর্যগ্রহীদুগ্ররীর্ষং

তস্যামাত্যং দ্যুমন্তং র্যজনি চ সমরঃ সপ্তরিংশত্যহান্তঃ ॥ 86.1 ॥

তারভ্রুং রামশালী ৱরিতমুপগতঃ খণ্ডিতপ্রায়সৈন্যং

সৌভেশং তং ন্যরুঙ্কাঃ স চ কিল গদযা শার্ঙ্গমভ্রংশযন্তে।
মাযাতাতং র্যহিংসীদপি তর পুরতস্তভ্রুযাপি ক্ষণার্ধং

নাজ্জাযীত্যাহুরেকে তদিদমরমতং র্যাস এর ন্যষেধীৎ ॥ 86.2 ॥

ক্ষিপ্ত্বা সৌভং গদাচূর্ণিতমুদকনিধৌ মঙ্ক্ষু সাল্লেহপি চক্রে -

ণোৎকৃতে দন্তরক্রঃ প্রসভমভিপতন্নভ্যমুঞ্চদগদাং তে।
কৌমোদক্যা হতোহসারপি সুকৃতনিধিশ্চৈদ্যরৎপ্রাপদৈক্যং

সর্বেষামেষ পূর্নং ৱরিযি ধৃত মনসাং মোক্ষণার্থোহরতারঃ ॥ 86.3 ॥

ৱরয্যাযাতেহথ জাতে কিল কুরুসদসি দ্যুতকে সংযতাযাঃ

ক্রন্দন্ত্যা যাঙ্কসেন্যাঃ স করুণমকৃথাশ্চেলমালামনন্তাম্।
অনান্তপ্রাপ্তশর্রাংশজমুনিচকিতদ্রৌপদী চিন্তিতোহথ

প্রাপ্তঃ শাকান্নমগ্নন্ মুনিগণমকৃথাস্তৃপ্তিমন্তং রনান্তে ॥ 86.4 ॥

যুদ্ধোদ্যোগেহথ মন্ত্রে মিলতি সতি বৃতঃ

ফল্গুনেন ৱরমেকঃ
কৌরবে দত্তসৈন্যঃ করিপূরমগমো

दौत्यकृं पाणुरार्थम्।
डीष्यद्रोणादिमान्ये तर खलु रचने
धिक्षते कौररेण
र्यारृणन् रिश्वररूपं मुनिसदसि पुरीं
क्लोभयिंरागतोहडुः ॥ 86.5 ॥

जिषेणसुं कृषु सूतः खलु समरमुखे वक्नुघाते दयालुं
थिनं तं रीक्ष्य रीरं किमिदमयि सथे नित्य एकोहयमात्मा।
को रध्यः कोहत्र हन्ता तदिह रधडियं प्रोज्ञ्य मय्यर्पितात्मा
धर्म्यं युद्धं चरेति प्रकृतिमनयथा दर्शयन् रिश्वररूपम् ॥ 86.6 ॥

डक्तोडुंसेहथ डीष्ये तर धरणिडर -
क्लेपकृतैकसक्ते
नित्यं नित्यं रिडिन्दत्युतसमधिकं
प्राप्तसादे च पार्थे।
निश्वसुंरप्रतिङ्गां रिजहदरिररं
धारयन् क्रोधशाली -
राधारन् प्राङ्गलिं तं नतशिरसमथो
रीक्ष्य मोदादपागाः ॥ 86.7 ॥

युद्धे द्रोणस्य हस्तिस्त्रिरणडगदतेरितं रैषुंरासुं
रक्षस्याधु चक्रसुगितररिमहाः प्रादयंसिक्कुराजम्।
नागासुं कर्णमुक्ते स्फितिमरनमयन् केरलं कृतमौलिं
तत्रे तत्रापि पार्थं किमिर नहि डरान् पाणुरानामकार्षीं ॥ 86.8 ॥

युद्धादौ तीर्थगामी स खलु हलधरो नैमिशक्लेत्रमृच्छ -
नप्रतुथायिसूतक्षयकृतथ सूतं तंपदे कल्लयिंरा।

यञ्जुघ्नं बल्ललं पराणि परिदलयन् स्नाततीर्थो रणाञ्जे
सम्प्राप्तो भीमदुर्योधनरणमशमं वीक्ष्य यातः पुरीं ते ॥ 86.9 ॥

संसुप्तद्रौपदेयक्षपणहतधियं द्रौणिमेत्य एरदुक्त्या
तनुक्तं ब्राम्हमस्रं समहत रिजयो मौलिरत्नं च जहे।
उच्छित्ये पाञ्चरानां पुनरपि च विशतुयन्तरागर्भमस्रे
रक्षन्सुर्धमात्रः किल जठरमगाश्चक्रपाणिर्बिभो एरम् ॥ 86.10 ॥

धर्मोघं धर्मसूनोरभिदधदधिलं
छन्दमृत्युस्स भीष्म -
स्त्रां पश्यन् भक्तिभूमैर हि सपदि यथौ
निष्कलब्रह्मभूयम्।
संयाज्याथाश्रमेधैस्त्रिभिरतिमहितै -
धर्मजं पूर्णकामं
सम्प्राप्तो द्वारकां एरं परनपुरपते
पाहि मां सररोगां ॥ 86.11 ॥

॥ इति श्रीमन्नारायणीये षडशीतितमं दशकं समाप्तम् ॥